डॉ. बिपिन पाण्डेय

मातु शारदा से कवियों का बहुत पुराना नाता है।
इसीलिए हर कोई उनको सादर शीश झुकाता है।

करें इकट्ठा धन दौलत सब खूब ठगी में लगे हुए,
नश्वर जगत ज्ञात सबको है हाथ नहीं कुछ आता है।

बेड़ा गर्क सदा करता है, साफ- सफाई का वह ही
बार-बार समझाने पर जो, शौच खुले में जाता है।

वैसे तो है विदित सभी को,अति आवश्यक है शिक्षा ,
जो समदर्शी हुआ जगत में, बेटी वही पढ़ाता है।

सबकी चाह यही जीवन का,हर अँधियारा मिट जाए,
जिसके पास नहीं दीपक घर,जुगनू से चमकाता है।

तन की सबको चिंता रहती,सभी सजाते हैं उसको,
बदल गया परिवेश हाय रे, मन को कौन सजाता है।

घृणा द्वेष की बेल लगाना काम रहा है दुश्मन का,
जिसको प्यार देश से होता,गीत प्रेम के गाता है।

किसी ने हँसाया किसी ने रुलाया।
मिटा द्वेष सबको गले से लगाया।।1

सभी मुश्किलों को सहा है सदा ही,
मगर आँसुओं को बहाना न आया।2

अँधेरे में' जिसने नहीं राह छोड़ी,
उसी को जगत ने सदा सिर झुकाया।3

बिना सूर्य की रोशनी के हुआ है,
नहीं इस धरा पर तिमिर का सफाया।4

मिली हैं दुआएँ उसी को सभी की,
भुला भेद जो और के काम आया।5

बहा स्वेद सींचे धरा जो हमारी,
उसी को हमेशा गया है सताया।6

लगन से करो काम मंजिल मिलेगी,
सभी ने यही एक पथ है सुझाया । 7

दिया नव आस का सबको जलाना भी जरूरी है ।
नया नित मार्ग सबके हित बनाना भी जरूरी है।।

नई आए चुनौती जो सभी मिलकर उसे झेलें,
नहीं चर्चा करो उसको मिटाना भी जरूरी है।2

उसे भी जन्म लेने दो करो सब प्यार बेटी को,
मगर इतना नहीं काफी पढ़ाना भी जरूरी है।3

धरा के वृक्ष भूषण हैं समझ लो बात ये सारे,
लगाना ही नहीं काफी बचाना भी जरूरी है।4

किसी का आँख का जादू करे तुमको अगर घायल,
जगह उस व्यक्ति के दिल में बनाना भी जरूरी है।5

कमी यदि है कहीं दिखती छुपाओ मत उसे कोई,
बड़े ही प्यार से उसको बताना भी जरूरी है।6

ISSN:2583-8849